पशुपालन से गढ़ रहे सफलता के नए आयाम

पशुपालक का नाम	:	श्री प्रेम सिंह
पिता का नाम	:	श्री सोरन सिंह
उम्र	:	36 वर्ष
पता	:	जागीरपुरा, सैपऊ (धौलपुर)
शिक्षा	:	12वीं
मोबाईल नं.	:	9772085334

36 वर्षीय युवा प्रेमसिंह ने 12वीं कक्षा पास करने के बाद अपने पुश्तैनी धंधे खेती और पशुपालन को ही आगे बढ़ाने की सोची। उन्होंने अपनी 15 बीघा कृषि को फार्म हाउस में बदला। इससे पूर्व घर की जरूरत के अनुसार उनके पास 2 दुधारू पशु थे। परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को व्यवसाय के रूप में शुरू किया। उनके पास 15 बीघा जमीन के बावजूद जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है उतनी कृषि से नहीं हुई। वर्तमान में उनके पास 12 भैंस है जिससे लगभग 80–100 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन ले रहे हैं। इससे उनकी वार्षिक आय लगभग 9–11 लाख रुपये हो जाती हैं। वे समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में शामिल होते रहते हैं। व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के पशु विशेषज्ञों से जानकारी एवं समस्याओं के निराकरण हेतु संपर्क में रहते हैं। पशुओं के गोबर के उपयोग के लिए भी उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट की समुचित व्यवस्था कर रखी है और बाजार में बेचकर अपनी आय को दुगुना कर रहे हैं। जीवन के उस मुश्किल दौर में प्रेमसिंह ने आजीविका के लिए पशुपालन को अपना साथी बनाया बस यही एक फैसला, आज उनके और परिवारजनों के लिए वरदान साबित हुआ। उनके हौंसले की उड़ान को पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर ने नई सोच और दिशा दी है, जिसकी बदौलत वे पशुपालन करते हुए सफलता के नए आयाम गढ़ रहे हैं।

नौकरी के साथ पशुपालन को आजीविका का साधन बनाया

पशुपालक का नाम	:	श्री भीकम सिंह त्यागी
पिता का नाम	:	श्री वीर नारायण त्यागी
उम्र	:	65 वर्ष
पता	:	मूसलपुर, सैपऊ (धौलपुर)
शिक्षा	:	बीए, बी.एड.
मोबाईल नं.	:	9460182474

भीकम सिंह गांव मूसलपुर, तहसील सैपऊ, जिला धौलपुर के एक रिटायर्ड अध्यापक हैं जो कि एक बड़े संयुक्त परिवार में रहते हैं। बड़ा परिवार होने के कारण परिवार को संभालने की जिम्मेदारी उन पर जल्दी आ गई लेकिन उन्होंने अपनी नौकरी के साथ–साथ कृषि एवं पशुपालन पर ध्यान दिया। उनके पास जमीन तो काफी थी लेकिन जल संसाधनों की कमी के कारण पशुपालन को अपना आजीविका का साधन बनाया। वो पशुपालन तो कर रहे थे पर उचित ज्ञान के आभाव में अच्छा मुनाफा नहीं ले पा रहे थे। एक दिन उनके गांव में पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के द्वारा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे भीकम सिंह को पशुपालन के नए आयामों के बारे में एवं टीकाकरण का महत्व, अन्तः–बाह्य कृमियों की जानकारी, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीके, अजोला के होने वाले फायदे, कृत्रिम गर्भाधान, मौसमी बीमारियां एवं उनके बचाव इत्यादि के बारे में कई जानकारियां मिली। इन नई तकनीकों को उन्होंने अपने यहां अपनाया एवं पशुपालन में काफी मदद ली। अब भीकम सिंह समय–समय पर पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर से संपर्क करते रहते हैं। भीकम सिंह की इस सफलता से आस–पास के दूसरे किसान भाई प्रेरित होकर पशुपालन को आज एक व्यवसाय से रूप में देखने लगे हैं। अब उनकी डेयरी में 18 भैंस हैं और उनकी साल की आय 10–12 लाख है। वे अपने और अपने परिवार के आर्थिक और सामाजिक जीवन स्तर को बेहतर बनाने का श्रेय पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर को देते हुए भीकम सिंह कहते हैं कि समय–समय पर दी गयी जानकारी का उन्हें फायदा मिला है और जिसकी बदौलत आज वे इस मुकाम पर हैं।

डिप्लोमा से नौकरी नहीं मिलने पर पशुपालन को अपनाया

पशुपालक का नाम	:	श्री हेमेन्द्र
पिता का नाम	:	श्री रामखिलाड़ी शर्मा
उम्र	:	35 वर्ष
पता	:	रनजीतपुरा, सैपऊ (धौलपुर)
शिक्षा	:	जी एन एम डिप्लोमा
मोबाईल नं.	:	919549233693

35 वर्षीय युवा हेमेन्द्र जी.एन.एम. डिप्लोमा करने के बाद नौकरी की तलाश में निकले लेकिन उनके भाग्य में नौकरी नहीं थी। नौकरी नहीं मिलने पर निराश होने की बजाय अपने पुश्तैनी धंधे खेती और पशुपालन को ही आगे बढ़ाने की सोची। उन्होंने अपनी 17 बीघा कृषि को फार्म हाउस में बदला। इसके पूर्व घर की जरूरत के अनुसार तीन ही दुधारू पशु थे परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को व्यवसाय के रूप में शुरू किया। उनकी 20 बीघा जमीन के बावजूद जितनी बचत पशुपालन से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं हुई। वर्तमान में उनके पास 11 भैंस व 5 गाय हैं। जिससे लगभग 90–110 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन ले रहे हैं। अब उनकी वार्षिक आय लगभग 9–11 लाख रुपये तक हो जाती है। वे समय–समय पर पशुपालन कि उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेते रहते हैं। व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के पशु विशेषज्ञों से जानकारी एवं समस्याओं के निराकरण हेतु संपर्क में रहते हैं। पशुओं के गोबर के उपयोग के लिए भी उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट की समुचित व्यवस्था कर रखी है, जिसको बाजार में बेचकर अपनी आय को दुगुना कर रहे हैं। जीवन के इस मुश्किल दौर में हेमेन्द्र ने आजीविका के लिए पशुपालन को अपना साथी बनाया बस यही एक छोटा सा फैसला, आज उनके और परिवारजनों के लिए वरदान साबित हुआ। उनकी इस उड़ान को पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर ने नई दिशा दी है, जिसकी बदौलत वे पशुपालन करते हुए सफलता के नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

पढ़ाई छोड़ कर पशुपालन से परिवार को दिया आर्थिक संबल

पशुपालक का नाम	:	श्री शशिपाल
पिता का नाम	:	श्री हरिनिवास त्यागी
उम्र	:	45 वर्ष
पता	:	कुरेधा, सैपऊ (धौलपुर)
शिक्षा	:	12वीं पास
मोबाईल नं.	:	919636286964

शशिपाल गांव कुरेधा, तहसील सैपऊ, जिला धौलपुर के एक संयुक्त परिवार में रहते हैं। बड़ा परिवार होने के कारण परिवार को संभालने की जिम्मेदारी उन पर जल्दी आ गई तो उन्होंने अपनी पढ़ाई को बीच में छोड़ कर कृषि एवं पशुपालन पर ध्यान दिया। उनके पास जमीन तो काफी थी लेकिन जल संसाधनों की कमी के कारण उसका पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे थे, अतः उन्होंने पशुपालन को अपना आजीविका का साधन बनाया। वे पशुपालन तो कर रहे थे पर उचित ज्ञान के अभाव में अच्छा मुनाफा नहीं कमा पा रहे थे। पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों से शशिपाल ने वैज्ञानिक पशुपालन के बारे में टीकाकरण का महत्व, अन्तः–बाह्य कृमियों से बचाव की जानकारी, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीके, अजोला से होने वाले फायदे, कृत्रिम गर्भाधान, मौसमी बीमारियों एवं उनके बचाव इत्यादि के बारे में कई जानकारियां प्राप्त की। इन नई तकनीकों को उन्होंने अपने यहां अपनाया और पशुपालन में काफी मदद ली। अब शशिपाल समय–समय पर पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर से संपर्क करते रहते हैं। शशिपाल की इस सफलता से आस–पास के दूसरे किसान भाई प्रेरित होकर पशुपालन को आज एक अच्छे व्यवसाय से रूप मे देखने लगे हैं। अब उनकी डेयरी पर 20 भैंस हैं तथा उनकी सालाना आय 8–10 लाख रुपये तक है। अपने और अपने परिवार के आर्थिक और सामाजिक जीवन स्तर को बेहतर बनाने का श्रेय पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर को देते हुए शशिपाल का कहना है नवीनतम तकनीकों के उपयोग से ही आर्थिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है।

ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय छोड़ कर भैंस पालन शुरू किया

पशुपालक का नाम	:	श्री बबलू राजपूत
पिता का नाम	:	श्री भवानी राजपूत
उम्र	:	23 वर्ष
पता	:	जगीरपुरा, सैपऊ (धौलपुर)
शिक्षा	:	बी. एससी
मोबाई नं.	:	8410005505

विज्ञान में स्नातक करने के बाद बबलू ने 2–3 साल तक अपने परिवार के ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को अपनाया। अपने गाँव की तरफ झुकाव एवं पशुपालन में रूचि होने से उन्होंने पशुपालन में भी हाथ आजमाया। उनके पास 5 बीघा जमीन थी जिस पर भैंस पालन चालू किया। शुरुआत निश्चित रूप से संघर्ष भरी थी लेकिन वो कड़ी मेहनत और सच्ची लगन के साथ भैंस पालन में लगे रहे। लेकिन तमाम प्रयासों के बावजूद भी उनकी आमदनी नहीं हो पा रही थी। फिर एक दिन वो पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर के संपर्क में आए और उन्होंने बहुत सी वैज्ञानिक तकनीकियों जैसे प्रजनन एवं नस्ल सुधार, टीकाकरण का महत्व, अन्तः–बाह्य कृमियों से बचाव की जानकारी, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीके, चारे के संरक्षण की हे और साइलेज विधि, अजोला से होने वाले फायदे, मौसमी बीमारियाँ एवं उनके बचाव इत्यादि के बारे मे जानकारी हासिल की। अब बबलू जी पशुपालन से सम्बंधित अनेकों प्रशिक्षण कार्यक्रमों, पशु मेलों तथा किसान मेलों में भाग लेते हैं। अब उनके फार्म में मुर्रा एवं भधावरी नस्ल की 15 भैंसें हैं एवं उनकी आमदनी भी पहले से दुगनी हो चुकी है। वे लगभग सालाना 8–10 लाख रुपये की आय अर्जित कर लेते हैं। बबलू समय–समय पर पशु विज्ञान केंद्र, धौलपुर पर आकर भैंस पालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेते रहते हैं। इस व्यवसाय से बबलू जी काफी उत्साहित है एवं अन्य किसानों को भी भैंसपालन के लिए प्रेरित करते रहते हैं।